उत्तराखण्ड की तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या आजिविका के लिए कृषि पर निर्भर है। पर्वतीय कृषि के वर्षा आधारित होने के कारण यहाँ पर फसल उत्पादन बहुत कम है। पर्वतीय क्षेत्रों की फसल पद्धति मुख्य रूप से पारंपरिक कृषि पर आधारित है। उत्तराखण्ड में ऊँचाई वाले क्षेत्रों में अनुकुल जलवायु के कारण संरक्षित खेती द्वारा सब्जी उत्पादन की अपार संभावनाओं के होते हुए भी अधिकतर किसान पारम्परिक कृषि के द्वारा ही निर्वाह कर रहे हैं।

अल्मोड़ा जिले से 40 किलोमीटर एवं प्रसिद्ध जागेश्वर धाम से मात्र 5 किलोमीटर दूर स्थित भगरतोला गाँव को 2005 में अंगीकृत कर वहाँ के परिदृश्य को संस्थान द्वारा विकसित उन्नत तकनीकों के प्रयोग तथा किसानों के सहयोग द्वारा बदलने का प्रयास किया गया।

अंगीकरण से पूर्व गाँव के कृषकों व युवाओं को उन्नत कृषि विधियों व टिकाऊ खेती की अपूर्ण जानकारी थी जिस कारण कृषि उत्पादन बहुत कम था। अधिकतर किसान कृषि में रूचि छोड़ अन्य व्यवसाय अपनाने को मजबूर थे। संस्थान व कृषकों की सक्रिय प्रतिभागिता से गाँव में वैज्ञानिक विधि से कृषि कार्य शुरू किया गया। संस्थान द्वारा इस क्षेत्र के किसानों को उन्नत प्रजातियों के बीज उपलब्ध कराये गये जिससे पारंपरिक खेती की तुलना में खाद्य फसलों की उत्पादकता में 35 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी है। साथ ही खाद्य व औद्यानिक फसलों में संतुलन भी सम्भव हो पाया है।

संरक्षित सब्जी उत्पादन

गाँव की जलवायु बेमौसमी सब्जी उत्पादन हेतु अनुकुल होने के कारण विविधीकरण के अर्न्तगत परंपरागत कृषि प्रणाली का रूख सब्जी उत्पादन की ओर करने में संस्थान पूर्णतः सफल रहा है। किसानों की सक्रिय सहभागिता से भगरतोला गाँव में 40 से अधिक पौलीटैंक व 80 से अधिक पॉलीहाउस का निर्माण किया गया । बेमौसमी सब्जी उत्पादन कर कृषकों की आय मे दुगनी वृद्धि हुई है।

जल संग्रहण

सब्जी उत्पादन के लिए पानी उपलब्ध कराने हेतु प्रत्येक पॉलीहाउस को पालीटैंक से जोड़ा गया। पॉलीटैंक मे पानी लगातार एकत्रित करने हेतु पालीटैंक को प्राकृतिक जल स्त्रोत से जोड़ा गया व टपक सिंचाई प्रणाली का सफल प्रयोग किया गया। पूर्व में जो जल स्त्रोत सूख गये थे उन्हें पुर्नजीवित किया गया। वर्तमान में पॉलीटैंक की सहायता से कृषक अपने पॉलीहाउस व खुले खेत में टमाटर, शिमला मिर्च, ककड़ी, गोभी इत्यादि का सफल उत्पादन कर विभिन्न स्थानों मे इसका विपणन कर रहे हैं। वर्ष 2006–2013 के दौरान यहाँ कुल 8000 फल वृक्षों (कीवी, आड़ू, नेक्टरीन, पुलम, खुमानी, अखरोट, नाशपाती) का रोपण लगभग 62 प्रतिशत जीवित दर के साथ सफलता पूर्वक किया गया।

अन्य गतिविधियाँ

पशुपालन प्रबन्धन पर बल देते हुए कृषकों को पशुपालन हेतु प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के अर्न्तगत 500 से अधिक पशुओं का इलाज डीवर्मिंग (कीडे की रोकथाम) के लिए किया गया। साथ ही पोषक पशु भोज्य एवं खनिज मिश्रण भी उन्हे प्रदान किया गया।

चारे की समस्या के समाधान हेतु भगरतोला गाँव में हाइब्रिड नेपियर और अन्य बहुउद्देशीय वृक्षों का रोपण कराया गया तथा पॉलीटैंक में मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया गया। जिसके फलस्वरूप प्रति यूनिट 6000 रूपये तक का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त केंचुआ व मधुमक्खी पालन और कुरमुला नियंत्रण आदि मुख्य आयामों पर संस्थान द्वारा प्रशिक्षण व सहयोग प्रदान किया गया। कृषकों द्वारा

संरक्षित कृषि के अन्तर्गत विभिन्न लाभकारी फसल चक्र अपनाये जा रहे हैं।

टमाटर (मार्च–जून)	–	टमाटर (जुलाई–नवम्बर)	–	हरी सब्जियाँ (दिसम्बर–फरवरी)
कद्दू (मार्च–मई)	–	टमाटर (जून–नवम्बर)	–	फूल गोभी (नवम्बर –मार्च)
खीरा (मार्च–मई)	–	टमाटर (जून–नवम्बर)	–	फूल गोभी (नवम्बर –मार्च)

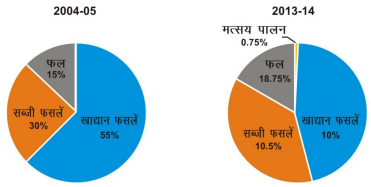

अंगीकरण से पूर्व व बाद गाँव में विभिन्न फसलों का क्षेत्रफल

फसल विविधिकरण के कारण पोषण स्थिति में अन्तर जानने हेतु 2012–13 के दौरान भगरतोला ग्राम की महिलाओं का आहार व पोषण सम्बन्धी स्थिति का आंकलन किया, जिसमें यह पाया गया कि भगरतोला ग्राम की महिलाओं का आहार व पोषण सम्बन्धी स्थिति उनके समकक्षों से बेहतर है, परन्तु फिर भी संस्तुत स्तर से कम है। औद्यानिकी मिनी मिशन के अर्न्तगत किसानों को क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराने में संस्थान ने अहम भूमिका निभाई। आर्थिक नियमितता को बनाए रखने, उच्च ब्याज दर के साथ साथ स्थानीय ऋण को कम करने और किसानों के बीच सब्जी उत्पादन की बेहतर तकनीक के प्रसार हेतु कृषक समूहों की स्थापना की गई। संस्थान व नाबार्ड की सहायता से बनाये गये इन कृषक क्लब व स्वयं

भाकृअनुप-वि.प.कृ.अनु.सं. प्रसार प्रपत्र (112/2017)

भगरतोला विकास के पथ पर- संस्थान द्वारा सफल प्रयास

सहायता समूहों के माध्यम से कृषक सदस्यों को आसानी से बैंक द्वारा ऋण प्राप्त हो रहा है।

कृषकों को संगठित कर बाजार से जोड़ने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा नाबार्ड के सहयोग से "विवेकानन्द कृषि उत्पादन सहकारी समिति" की स्थापना की गई है। इस संघ में भगरतोला के अलावा आस पास के अन्य गाँवों के किसानों को भी जोड़ा गया हे ताकि पूरे क्षेत्र के किसानों को संगठित कर अधिक लाभ उन तक पहुँचाया जा सकें।

मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम

संस्थान द्वारा "मेरा गाँव मेरा गौरव" कार्यक्रम के अर्न्तगत भगरतोला व आस पास के गाँव में उन्नत कृषि तकनीकों का प्रचार प्रसार किया जा रहा है।

कृषि विशेषज्ञों द्वारा समय समय पर कृषकों के खेतों की जाँच की जाती है और कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निदान बताया जाता है।

भगरतोला ग्राम की उपलब्धियाँ

कृषकों व कृषक समूहों को समय समय पर इनकी कार्य प्रणाली एवं उन्नत कृषि के क्षेत्र में इनकी उपलब्धि के आधार पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण बैंक (नाबार्ड), राज्य सरकार एवं वि.प.कृ.अनु.सं, अल्मोड़ा द्वारा समय–समय पर पुरस्कृत किया गया। भगरतोला ग्राम के प्रगतिशील किसान श्री अम्बा दत्त पाण्डे को वर्ष 2009 में तत्कालीन माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार द्वारा सम्मानित किया गया।

विवेकानन्द किसान क्लब भगरतोला व विवेकानन्द किसान क्लब, डिंगरीगूठ को वर्ष 2009 व 2012 में उत्कृष्ट कार्य हेतु नाबार्ड द्वारा राज्य स्तरीय उत्कृष्ट कृषक क्लब का पुरस्कार प्रदान किया गया। भगरतोला ग्राम के प्रगतिशील किसान श्री खीमानन्द पाण्डे और श्री हरीश चन्द्र पाण्डे को संस्थान द्वारा 2016 व 2017 में पुरस्कृत किया गया।

इस प्रकार विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के द्वारा अंगीकृत ग्राम भगरतोला निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

आलेख
जयदीप कुमार बिष्ट, रेनू जेठी, निर्मल कुमार हेडाउ, के. के. मिश्रा, जानसन स्टैन्ली एवं पंकज कुमार मिश्रा
सम्पादन सहयोग
रेनू सनवाल
मुद्रण सहयोग : पी.एम.ई सैल
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:–
निदेशक
भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
अल्मोड़ा–263601(उत्तराखण्ड), भारत
दूरभाषः (05962) 230060, 230208
फैक्सः (05962) 231539
ई–मेलः vpkas@nic.in, वेबसाइटः www.vpkas.icar.gov.in

भाकृअनुप-विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
(आई.एस.ओ 9001 : 2015 प्रमाणित संस्थान)
अल्मोड़ा – 263601 (उत्तराखण्ड), भारत

2017

निःशुल्क कृषक हैल्प लाइन – 1800 180 2311
सम्पर्क समय – प्रत्येक कार्य दिवस (प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक)

Design & Printed at : APNA JANMAT, D.Dun # 0135-2653420, 9837209996